वेदों में वीरता सूक्त एक अध्ययन

सहा. प्राध्यापक जनेन्द्र कुमार दीवान*
शास.वि.या.ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध सार : वैदिक साहित्य के विषय में

प्रायः यही समझा जाता है कि वेदों में कर्मकाण्ड हैं, यज्ञ व देवताओं के विषय में वर्णन हैं किन्तु यह सही नहीं है। वेदों में वीरता एवं पुरूषार्थ के विषय में भी बहुत उच्च विचार मिलते हैं। ''वेद'' शब्द का अर्थ ही ज्ञान होता है। इस तरह उसमें विभिन्न ज्ञान–विज्ञान का वर्णन है।

वीर शब्द में वि उपसर्ग पूर्वक ईर् धतु से बनता है जिसका अर्थ साहसी या पराक्रमी होता है। वीर शब्द की व्युत्पत्ति निरूक्त में इस प्रकार की गई है– ''वीरयति अभित्रान्'' अर्थात जो शत्रुओं को अनेक प्रकार से कंपा देता है उसे वीर कहा जाता है।

इस शोध लेख में यही विचार किया गया है वेद भाग्य पर निर्भर रहने को नहीं कहते अपतु कर्म करने की सीख देते हैं। वेद की शिक्षा यह नहीं है कि तुम संसार में अकर्मण्य एवं भाग्यवादी बनकर निष्क्रिय बैठे रहो। कर्मरहित भक्तिवाद और भाग्यवाद के प्रचार से भारत को बहुत हानि हुई है। वेद कर्मयोग एवं वीरता की बात करता है।

भूमिका

वैदिक साहित्य में विभिन्न विषयों पर चिन्तन एवं मंथन किया गया है। वेद में बहुत से सूक्त बहुत उत्तम एवं नैतिकता के लिए आदर्श हैं। इन सूक्तों का मानव समाज में बहुत महत्व है। इन मानव प्रेरित होता है उसे मार्ग मिलता है एवं समाज को एक दिशा मिलती है।

वेदों में भाग्यवाद के बजाय कर्म पर जोर दिया गया है। वेदों में बहुत से सूक्त हैं जो पुरूषार्थ की बाते करते हैं और ये सूक्त मानव को ऊर्जा एवं उत्साह से भर देते हैं। मानव के उत्थान के लिए विचारों की बड़ी भूमिका होती। उच्च उदात विचार मानव को सदियों तक प्रेरित करते हैं।

वेदों में वीरता एवं पुरूषार्थ के सूक्त सर्वसाधारण के मन में वीरता की भावना भरते हैं। यह संसार एक कर्मभूमि है, जीवन एक संघर्ष है, यह विश्व एक युद्धभूमि की तरह है। मनुष्य को अपने जीवन में बहुत से विध्नों से गुजरना पड़ता है। मनुष्य को संसार में बड़े–बड़े संघर्ष करने पड़ते हैं। इन विध्न–बाधाओं को पार करने के लिए मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरित करते हैं।

वेद की वाणी है–

हे मनुष्य ! तु उठ आगे बढ़। हिम्मत मत हार, आशावादी बन और तेरे मार्ग में जो बाधक बनकर खड़े हो। उन्हें तोड़ता–फोड़ता कुचलता हुआ, आगे बढ़ता जा।

कृंत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सत्य आहितः ।। 1 (अथर्वः 7/52/8)

मेरे दाएँ हाथ में कर्म या पुरूषार्थ है, बाएँ हाथ में विजय है। देखिए, वेद का सन्देश कि वीर पुरूषार्थी, कर्मण्य बनों, ओजस्वी, निर्भय आशावादी बनो। मन्युमान बनों। वेद की यह शिक्षा निरंतर मनुष्य को उत्साहित एवं प्रेरित करने वाली है। कर्म को महत्व देने वाला सक्त यजुर्वेद में आता है जो कर्म करने के लिए प्रेरित करता है।

कुवेन्नेवेह कर्माणि जिजीविशेच्छतं समाः।। 2 (यजु. 40/12)

हे मनुष्य– तू कर्म करते हुए सौ वर्ष जीने की इच्छा कर।

प्रेम जयता नर इन्द्रों वः शर्क यच्छतु। उग्राः वः सन्तु बाहवों उनांधृष्या यथासथ।। 3

ऋग्वेद (10/103/13)

*Corresponding Author: Mobile No. 9399539019

Scanned with OKEN Scanner

वीरों। उठो, आगे बढ़ों, और विजय प्राप्त करो। इन्द्र तुम्हें सुख दें।
तुम्हारी भुजाओं में बल हो, जिससे कि तुम कभी पराजित न सको।
सँसीदस्व, महाँ असि शोयस्व देववीतमः। वि धूममग्ने अरूषं मियेध्य। 4

सज प्रशस्त
(ऋग्वेद 1/36/9)
(यजु 11/37)

हे नर ! उत्तक स्थिति प्राप्त कर, तू महान है। संसार में चमक (जगमगा)
कामना करने वाला बन। हे पवित्र, हे प्रशस्त, हे अग्नि स्वरूप।
तू अपने आरोचमान, दर्शनीय प्रभाव रूप धुएँ को छोड़।
ऋतनिच्च सत्यनिच्च सेननिच्य सुशेण च। अन्तिममिष्च दूरे अमित्र च गणः। 5

(यजु. 17/83)

हे वीर। तू सत्याचरण से विजय लाभ कर। तू सत्यज्ञान से विजय लाभ कर। तू सेना से विजय लाभ कर। तू उत्तम सेनावाला बन। तू मित्रों को समीप रख।

अमित्रों को दूरभगा। तू उत्कृष्ट जनों का गण बन।

यथा सूर्यो नक्षत्राणामुद्यंस्तेजांस्याददे। एवा स्त्रीणां च पुसां च द्विशतां वर्य आ ददे। 6

(अथर्व. 7/13/1)

अरे, मुझे क्या तुमने साधारण मनुष्य समझ रखा है। मैं तो सूर्य हूँ, सूर्य। जैसे उदय होता सूर्य, सब नक्षत्रों के तेज को हर लेता है, वैसे ही मैं अपनी अपूर्व आभा के साथ जगत् में उदित होकर शत्रुता करने वाले सब स्त्री पुरूषों के तेज को हर लूंगा।

मम पुत्राः भात्रुहणोडयों ने दुहिता विराट। उताहमस्मि सज्जया पत्यों में श्लोक उत्तमः। 7

(ऋग्वेद 10/159/3)

मेरे पुत्र शत्रु के छक्के छुड़ा देने वाले हैं, मेरी पुत्री अद्वितीय तेजस्विनी है। मेरे पति में उत्तम कीर्ति का निवास है और मैं अपनी क्या बताऊँ? कोई मेरी ओर आँख उठाकर भी देखे तो, ऐसी हार कर लौटेगा कि सदा याद रखेगा। ऐसी है वेदों की नारी।

उत्कामात्: पुरूषमाव पत्था मृत्योंः पड्वीषमवभुज्यमानः। (अथर्व.8/01/4)

हे मनुष्य ! उन्नति कर, अवनति नहीं, मृत्यु की बेड़ी को काट। 8

उद्यानं ते पुरूष नावयानंक जीवांतु ते दक्षतातिं कृणोणि। 9 (अर्थवः 8/1/6)

हे मनुष्य ! देख जीवन में तुम्हारी सदा उन्नति ही होनी चाहिए, अवनति नहीं

तेरे अन्दर में जीवन बल फूंकता हूँ। यह मनुष्य के लिए ईश्वर का आदेश है।

जैसे हनुमान जी को अपनी शक्ति का ज्ञान नहीं था, वैसे ही मनुष्य भी अपनी शक्ति को पहचान नहीं पाता। वेदों की यह पवित्र वाणी उन्हें प्रेरित करती है कि अपने अंदर छुपी हुई शक्ति को पहचाने और आगे बढ़े। जब मनुष्य अपनी शक्ति को पहचान लेता है, तब फिर वह जगह–जगह दीनतापूर्वक क्रन्दन करता नहीं फिरता। वह वीरता के गीत गाता है। वह पराक्रम के गीत सुनाता है, अपनी शक्ति पर विश्वास करता है। वेदों के शब्दों में कहूँ तो– वह कहता है– अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद् धनं न मृत्यवेव–तस्थे कदाचन। 10 (ऋग्वेद 10/848/5)

मैं इन्द्र हूँ, मैं कभी हारता नहीं। मैं पराक्रमी हूँ, वीर हूँ, धन दौलत का प्रलोभन व मृत्यु मुझे परास्त नहीं कर सकते।

इस प्रकार वेद वीरता की बात करता है, पराक्रम की बात करता है, कर्म करने की बात करता है, वेदों के ये मंत्र आज भी प्रासंगिक हैं ऐसे वीरता के गीत ही वीरता के भाव लाते हैं जो निराश व्यक्ति के अंदर भी वीरता एवं आशा–विश्वाास का संचार कर देते है।

उपसंहार

शोध से यह स्पष्ट होता है कि वेदों में अकर्मण्यता की जगह कर्म एवं पुरूषार्थ की बात कही गई है। ये वीरता के सूक्त मनुष्य को वीर एवं साहसी बनकर अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रेरित करते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

वेद भक्ति के नाम पर कर्महीन एवं निर्जीव भक्तिवाद की बात नहीं करता। निःसन्देह एक समय था जब अहिंसा एवं भक्ति के नाम पर कायरता का प्रचार होने लगा यह भारत की अधोगति का बहुत बड़ा कारण रहा है। निःसन्देह भक्ति एवं अहिंसा हमारे धर्म के प्राण हैं परन्तु यह हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि भक्ति का अर्थ अकर्मण्यता एवं अहिंसा का अर्थ अकर्मण्यता नहीं है।

वेदों में भक्ति के गीत है, परन्तु वह भक्ति कर्महीन् बने रहने के लिए नहीं कहता। वेद भक्ति के साथ कर्मवीर एवं पुरूषार्थी बनने की प्रेरणा देते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अथर्वः 7/52/8
2. यजु. 40/12
3. ऋग्वेद 10/103/13
4. ऋग्वेद 1/36/9, यजु 11/37
5. यजु. 17/83
6. अथर्व. 7/13/1
7. ऋग्वेद 10/159/3
8. अथर्व. 8/01/4)
9. अर्थवः 8/1/6
10. ऋग्वेद 10/848/5

Scanned with OKEN Scanner